P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4* July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

महात्मा गांधी का सर्वोदय–दर्शन

रामदयाल मीना
शोध छात्र,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

गाँधी का दर्शन राजनीतिक चिन्तन में एक मौलिक प्रयोग है। इस प्रयोग की मौलिकता इस तथ्य में समाविष्ट है कि व्यक्तिवादी और समष्टिवादी दोनों प्रकार की आस्थाओं का गांधी के दर्शन में उनकी पूर्ण पराकाष्ठा तक निर्वाह हुआ है। व्यक्ति और समाज के प्रति जो दृष्टिकोण गांधी के चिन्तन में अपनाया गया है वह सर्वथा मौलिक है।

सर्वोदय गांधी के दर्शन का एक ऐसा महत्वपूर्ण पक्ष है जो उसके विचारों की तात्विक व आध्यात्मिक आस्था को भावी समाज की संरचना और मानव कल्याण की धारणा के साथ जोड़ता है। गांधी की सर्वोदय की धारणा गांधीय चिन्तन की वैचारिक आस्थाओं, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया व स्वरूप राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व नैतिक व्यवस्थाओं के आदर्श प्रतिमान आदि को एक साथ प्रस्थापित करती है। गांधी के सर्वोदय की धारणा एक सम्पूर्ण व्यवस्था का प्रतिमान प्रस्तुत करती है। इस प्रतिमान का मूल्यांकन किसी पूर्वाग्रहग्रस्त सामान्य टिप्पणी की नहीं, अपितु गंभीर व तटस्थ गवेषण की अपेक्षा करता है।

सर्वोदय विचारधारा का प्रादुर्भाव भारत में ही हुआ था। विभिन्न लोगों ने इस विचारधारा को अपनाया। सर्वोदयी विचारकों में विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण, काका कालेलकर, शंकरराव देव, दादा धर्माधिकारी, सिद्धराज डढ्ढा और ठाकुरदास बंग आदि के नाम प्रमुख है।

मुख्य शब्द : महात्मा गाँधी, सर्वोदय, दर्शन, सामाजिक परिवर्तन,।

प्रस्तावना

सर्वोदय वस्तुतः गाँधीय तत्व ज्ञान का रूपान्तरण है। शब्दार्थ के आधार पर सर्वोदय एक ऐसी स्थिति का संकेत करता है। जिसमें सबके कल्याण को एक साथ सुनिश्चित किया जाये। सबके उदय के एक साथ सुनिश्चित करने सर्वोदयी आग्रह राजनीतिक दर्शन का एक विलक्षण प्रयोग है। वस्तुतः राजनीतिक चिन्तन की कोई भी धारा मानवीय हितों की एकरूपता के उस स्तर की कल्पना नहीं करती, जहाँ सबके हितों के मध्य समस्त प्रकार के टकराव विलीन हो जाये। सर्वोदय चिन्तन के उस स्तर को व्यक्त करता है, जहाँ मानव मात्र के हितों के मध्य एक अनिवार्य एकरूपता और विलक्षण अद्वैत स्थापित हो जाता है। सर्वोदय कल्याण के नैतिक और आध्यात्मिक संदर्भो के प्रति समर्पित है और इस कारण वह सत्य से एकाकार हो जाने को उदय का उत्कर्ष मानता है। सत्य से साक्षात्कार की आध्यात्मिक अनुभूति किन्हीं दो व्यक्तियों के टकराव की किसी संभावना को समाहित नहीं करती, क्योंकि प्राणीमात्र की एकता इस अनुभूति का एक अनवार्य पक्ष है।

गाँधीजी ने जॉन रस्किन द्वारा लिखित पुस्तक 'अण्टु दिस लास्ट' का अध्ययन करने के बाद जो सार तैयार किया, वह 'सर्वोदय' के नाम से प्रकाशित हुआ। गाँधी जी ने इस पुस्तक में नैतिक मूल्यों का प्रतिपाद किया था, जिनके आधार पर वे राम–राज्य की स्थापना करना चाहते थे। इसकी प्रस्तावना में गाँधी जी ने लिखा है, ''सुकरात ने मनुष्य को क्या करना उचित है, इसे संक्षेप में समझाया है। कह सकते है कि उसने जो कुछ कहा है, रस्किन ने उसी का विस्तार कर दिया है। रस्किन के विचार सुकरात के ही विचारों का ही विस्तृत रू‍प है। सुकरात के विचारों के अनुसार चलने की इच्छा रखने वालों को भी भिन्न–भिन्न व्यवसायों में किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, रस्किन ने इसे बहुत अच्छी तरह बता दिया है।''

अध्ययन की आवश्यकता

सर्वोदय गांधी के दर्शन का एक ऐसा महत्वपूर्ण पक्ष है जो उसके विचारों की तात्विक व आध्यात्मिक आस्था को भावी समाज की संरचना और मानव कल्याण की धारणा के साथ जोड़ता है। गांधी की सर्वोदय की धारणा गांधीय चिन्तन की वैचारिक आस्थाओं, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया व स्वरूप

राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व नैतिक व्यवस्थाओं के आदर्श प्रतिमान आदि को एक साथ प्रस्थापित करती है।

विश्व में बहुविध सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक प्रणालियों के प्रयोग हुये हैं व हो रहे हैं चाहे ऐसी प्रणालियाँ उदारवादी लोकतंत्रों की कोटि की हो, अथवा नियंत्रणवादी साम्यवाद पर आधारित हो, तथापि व्यक्ति, समाज व राज्य के मध्य सम्बन्धों का अनुकूलतम सूत्र तथा विश्व के साथ जुड़ी हुयी अन्य सामान्य समस्याओं का समाधान अभी तक किसी एक विचारधारा के कलेवर में खोजा जाना सम्भव नहीं हुआ है। गांधी के सर्वोदय की धारणा का अध्ययन इस दृष्टि से पर्याप्त महत्व रखता है।

व्यक्तिगत गरिमा, सामाजिक न्याय, समाज निर्माण व अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के निर्वाह जैसे प्रश्नों पर सर्वोदयवादी दृष्टिकोण के सम्यक परीक्षण की प्रासंगिकता व उपादेयता निर्विवाद है।

गांधी के सर्वोदय की धारणा एक सम्पूर्ण व्यवस्था का प्रतिमान प्रस्तुत करती है। इस प्रतिमान का मूल्यांकन किसी पूर्वाग्रहग्रस्त सामान्य टिप्पणी की नहीं, अपितु गम्भीर व तटस्थ गवेषण की अपेक्षा करता है।

प्रस्तावित अध्ययन गांधीय दर्शन में सर्वोदय की धारणा से विवेचन व परीक्षण हेतु अभिप्रेत है।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्यों को सारतः अग्रलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता हैः

1. गाँधी के दर्शन को सामान्यतः व सर्वोदय दर्शन को विशिष्टतः प्रभावित व अभिनिर्धारित करने वाले तात्विक आधारों का अभिज्ञान व व्याख्या।
2. सर्वोदय के विशिष्ट संदर्भ में गांधीय चिन्तन पर पड़े अध्ययनजन्य व अनुभव जन्य भारतीय व पाश्चात्य प्रभावों का अभिज्ञान व व्याख्या।
3. सर्वोदय के दर्शन एवं धारणा का विश्लेषण।
4. सर्वोदय की व्यावहारिक क्रियान्वित के नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक संदर्भों की व्याख्या एवं विश्लेषण।
5. सर्वोदय व अन्य सांदर्भिक सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक दर्शनों की तुलना।
6. सर्वोदय दर्शन का मूल्यांकन व उसके औचित्य व प्रासंगिकता का आकलन।

अध्ययन की पद्धतियाँ

विषय की व्याख्या और अध्ययन के महत्व के उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि विषय के आयाम सैद्धान्तिक, दार्शनिक व व्यवहारिक समस्त प्रकार के हैं।

अध्ययन की प्रकृति के अनुरूप, अध्ययन की पद्धति वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। सर्वोदय की धारणा के तात्विक आधारों के अभिज्ञान व व्याख्या हेतु यथासम्भव गांधीजी के मूल कथनों को आधार बनाया गया है।

सर्वोदय के व्यवहारिक व व्यवस्थापरक पक्षों के वर्णन व विश्लेषण के लिए भी सामान्यतः स्वयं गांधी के मूल कथनों का आश्रय लिया गया है। विषय के अधिकारी विद्वानों के विचारों का भी यथावसर उपयोग किया गया है। निष्कर्ष विचारों के तार्किक वस्तुनिष्ठ व विवेक सम्मत धारणाओं व तथ्यों के अर्थान्वयन व विश्लेषण पर आधारित है। जहाँ कहीं आलोचनात्मक टिप्पणीयाँ की गई हैं, वह सदाषय व पूर्वाग्रह मुक्त है।

साहित्यावलोकन

महात्मा गांधी और सर्वोदयः एक अध्ययन के सन्दर्भ में किये गये इस शोध की आवश्यकता, उद्देश्यों तथा शोध पद्धति का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस विषय पर लिखे गये साहित्य का अवलोकन, विश्लेषण तथा मूल्यांकन किया गया है यथा–

राकेश कुमार झा द्वारा लिखित रचना ''गाँधीय चिन्तन में सर्वोदय'' (1995) में सर्वोदय की गाँधीय धारणा के व्यापक आयामों का स्पष्टीकरण कर उनकी प्रासंगिकता का परीक्षण किया गया हैं इस पुस्तक में बताया गया है कि सर्वोदय की व्याख्या राजनीतिक चिन्तन के परम्परागत वर्गीकरण यथा व्यक्तिवाद, समष्टिवाद अथवा समाजवाद की परिधि से परे एक पृथक स्तर पर की जानी चाहिए। गाँधी की सर्वोदय की धारणा चिंतन की वैचारिक आस्थाओं, सामाजिक परिवर्तन व स्वरूप, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व नैतिक व्यवस्थाओं के आदर्श प्रतिमान आदि को एक साथ प्रस्थापित करती है।

के.एल.कमल द्वारा लिखित पुस्तक ''गाँधी चिन्तन''(1995) में बताया गया है कि गांधी चिन्तन एवं कर्म का यद्यपि एक सन्दर्भ रहा है लेकिन वे केवल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं आधुनिक भारत की परिधि में आबद्ध नहीं किये जा सकते, वे मानवीय समस्याओं से जुड़े होने के कारण शाश्वतता को लिए हुए है। समस्याएँ चाहे पश्चिमी दुनिया की हो अथवा तृतीय विष्व के नवोदित राष्ट्रों की, उनके समाधान में कहीं न कहीं गांधी की सम्बद्धता झलकने लगती है। एक नये मानव, नये मूल्यो एवं नये समाज की संरचना की अवधारणा के निर्माण में गांधी पर विचार आवश्यक हो जाता है।

हरदान हर्ष द्वारा लिखित पुस्तक ''गांधी : विचार और दृष्टि''(1996) गांधी के वैचारिक विवेक को बहुत ही सच्चे स्वरूप में रखती है और एक ऐसी जीवन दृष्टि प्रदान करती है जिससे मौलिक भारतीयता का रूप सम्पुष्ट होता है। निश्चय ही गांधी ने समता का जो मूलमंत्र विष्व समाज को दिया है, वह उनकी 'वसुधैव कुटुम्बकम' विचारधारा को ठोस धरातल देता है। यह पुस्तक गांधीजी के अनेक अछूते आयामों को भी उद्घाटित करने में सफल रही है।

रामलाल विवेक ने अपनी रचना 'महात्मा गांधी : जीवन और दर्शन'' (1996) में लिखा है कि महात्मा गांधी का जीवन दर्शन मनुष्य जाति के लिए प्रेरणा का एक प्रमुख स्रोत है। आज जबकि मानवता युद्ध, आतंक, घृणा और हिंसा से त्रस्त है, महात्मा गांधी का जीवन दर्शन उसे सुरक्षा, शांति और प्रेम का मार्ग दिखाता है। पुस्तक में एक साधारण मनुष्य के देवत्व के स्तर तक पहुँचने के संघर्ष का ऐसा चित्रण है, जो पाठक के हृदय में सुशुप्त मानवीय प्रेम, करूणा और पुरूषार्थ की भावना को जागृत करता चला जाता है।

आचार्य विनोबा भावे अपनी पुस्तक 'सर्वोदय विचार व राज्य शास्त्र' (1958) में लिखते है कि 'सर्वोदय' शब्द अब तो चल पड़ा है। हर कोई उसकी दुहाई दे रहा

है। लोग कहते है कि इस शब्द का बहुत दुरूपयोग भी हो रहा है लेकिन मुझे इसका डर नहीं है बशर्ते कि कुछ लोग भी इसे सही मानेंगे तथा अपने जीवन में लाने की कोशिश करेंगे। विनोबा भावे ने इस पुस्तक में सर्वोदय की विचार सारणी, विचार हेतु चार प्रश्न, साधन शुद्धि का सिद्धान्त, सिद्धि का मार्ग, सर्वोदय की दीक्षा आदि विषयों पर प्रकाश डाला है।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा करने का प्रयास किया गया है। समय तथा अन्य परिस्थितियों की सीमा में रहते हुए जो साहित्य सुलभ हो पाये, उन्हीं की यहाँ समीक्षा की गई है।

सर्वोदय के तात्विक आधार

गांधी ने सर्वोदय के तात्विक आधार को अपनी आध्यात्मिक आस्था से संयुक्त किया था। सर्वोदय का सामान्य एवं शाश्वत रूप निर्विवाद रूप से अद्वैत एवं आध्यात्मवाद को स्वीकार करता है। सृष्टि के अन्दर शाश्वत नैतिक व्यवस्था में सर्वोदय का अखण्ड विश्वास है।

ईश्वर प्रत्यय गांधी के विचार का केन्द्र बिन्दु रहा है। शेष तत्व इसी केन्द्र के चतुर्दिक विद्यमान थे। परमेश्वर का साक्षात्कार ही जीवन का एक मात्र उचित ध्येय है। यह अनिर्वदनीय, अवर्णनीय, अद्भुत, सर्वव्यापी सत्ता है जिसका स्वरूप मन व वाणी से परे है। सर्वोदय का ईश्वर सबका ही होगा। अतः ईश्वर को सत्य एवं सत्य को ईश्वर माना गया है। अब इस व्यापक कल्पना में निरीश्वरवादियों की निरीश्वरता भी ईश्वरवाद ही कहलायेगी। एक मात्र उसी का सनातन अस्तित्व है। अतः समझने के लिए उसे सत्य कह सकते है। सत्य ही वस्तुतः ईश्वर का सही नाम है। इस सत्य की खोज में व्यक्ति को सत्य में विलीन कर देना पड़ता है। जहाँ स्वार्थ का अस्तित्व नहीं रहता। सत्य के अतिरिक्त किसी तत्व की सत्ता नहीं है। चूँकि हमारा काम राजकर्ता के बिना नहीं चलता। अतः ईश्वर अधिक प्रचलित है व रहेगा। लेकिन सत्य ही उसका सही नाम है सत्य के साथ ज्ञान अवश्य भावी है और जहाँ सत्य ज्ञान है वहाँ आनन्द होगा ही। अतः ईश्वर को हम सच्चिदानन्द भी कहते हैं।

सर्वोदय वस्तुतः गाँधीय तत्व ज्ञान का रूपान्तरण है। शब्दार्थ के आधार पर सर्वोदय एक ऐसी स्थिति का संकेत करता है जिसमें सबके कल्याण को एक साथ सुनिश्चित किया जाये। सबके उदय के एक साथ सुनिश्चित करने सर्वोदयी आग्रह राजनीतिक दर्शन का एक विलक्षण प्रयोग है। वस्तुत राजनीतिक चिन्तन की कोई भी धारा मानवीय हितों की एकरूपता के उस स्तर की कल्पना नहीं करती, जहाँ सबके हितों के मध्य समस्त प्रकार के टकराव विलीन हो जाये। राजनीतिक चिन्तन की विभिन्न धाराएँ समुदाय के सदस्यों के हितों के टकराव के संदर्भ में या तो किसी वर्ग–विशेष के हितों को सुनिश्चित किये जाने के औचित्य का प्रतिपादन करती है, अथवा समुदाय के विद्यमान टकरावपूर्ण हितों में सामंजस्य को आवश्यक मानती हैं।

सर्वोदय चिन्तन के उस स्तर को व्यक्त करता है जहाँ मानव मात्र के हितों के मध्य एक अनिवार्य एकरूपता और विलक्षण अद्वैत स्थापित हो जाता है। सर्वोदय कल्याण के नैतिक और आध्यात्मिक संदर्भों के प्रति समर्पित है और इस कारण वह सत्य से एकाकार हो जाने को उदय का उत्कर्ष मानता है। सत्य से साक्षात्कार की आध्यात्मिक अनुभूति किन्हीं दो व्यक्तियों के मध्य टकराव की किसी सम्भावना को समाहित नहीं करती, क्योंकि प्राणीमात्र की एकता इस अनुभूति का एक अनिवार्य पक्ष है।

इस प्रकार सर्वोदय वस्तुतः सभी व्यक्तियों के आध्यात्मिक उत्थान के प्रति अभिप्रेरित है उत्थान की सर्वोदयी परिभाषा की परिधि में राग, द्वेष, टकराव, द्वन्द्व या प्रतियोगिता के लिए कोई स्थान नहीं है।

सर्वोदयी तत्वज्ञान सांसारिक सत्य से पलायन की प्रेरणा नहीं देता, अपितु वह लौकिक जीवन को इस प्रकार संचालित व विनियमित करने पर बल देता है जिससे कि मानव मात्र के हितों के मध्य अनिवार्य एकता की आध्यात्मिक आस्था, सामाजिक दर्शन का मूल मन्त्र बन सके। सर्वोदयी सामाजिक दर्शन मानव मात्र की समानता पर अनिवार्यतः विश्वास करता है। व्यक्ति अपने भौतिक अस्तित्व का सर्वाधिक सार्थक उपयोग तभी कर सकता है जब वह अपनी सारी शक्तियों, कर्तव्यों और गतिविधियों को मनुष्य मात्र की सेवा के प्रति समर्पित कर दे। व्यक्ति के आचरणों पर बाह्य नियन्त्रणों का पूर्णतः अभाव और अपने अस्तित्व को दूसरों के अस्तित्व, सुख व सुरक्षा के लिए समर्पित कर देने की उत्कृष्ट लालसा व तत्परता सर्वोदयी नैतिकता के दो आधार स्तम्भ हैं। इस प्रकार दूसरों के सुख में सुख की खोज करना सर्वोदयी दर्शन में आनन्द की अनुभूति का मूल मन्त्र है। ऐसी स्थिति में व्यक्तियों के हितों के मध्य किसी लौकिक टकराव की सम्भावना भी समाप्त हो जाती है।

सर्वोदयी तत्वज्ञान का विचारधारा के स्तर पर रूपान्तरण सर्वोदय को व्यष्टिवाद और समष्टिवाद के समस्त प्रकारों से पृथक एक विलक्षण स्तर प्रदान कर देता है।

सर्वोदयः अर्थ व स्वरूप

सर्वोदय गांधी दर्शन का मर्म है। सर्वोदय का शाब्दिक अर्थ है ''सबका उदय'' अर्थात् समाज के प्रत्येक व्यक्ति का सर्वांगीण उत्थान। सर्वोदय की आस्था भारतीय सांस्कृति चेतना में सदैव से अर्न्तव्याप्त रही है। शताब्दियों पूर्व भारतीय संतों ने –

''सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तुनिरामया''

का जो स्वरूप रखा वह सर्वोदयी आस्था की उद्घोषणा का संभवतः प्राचीनतम उदाहरण है। जैनाचार्य समंतभद्र ने कहा है कि''सवेयदांमतकर निरतं सर्वोदय तीथीगिदीतथैव'' अर्थात् सर्वोदय अन्तर्निहित एवं सब आपत्तियों का विनाषक है, यह मेरा तीर्थ निस्तारक ही है। गीता के ''सर्वभूत हितेरता'' का तात्पर्य भी सर्वोदय ही है।

गाँधी भारत में सर्वोदय के जन्मदाता माने जाते है। रस्किन की पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट' का जब उन्होंने अध्ययन किया तो उनके जीवन में व्यावहारिक परिवर्तन आया। गाँधी ने इस पुस्तक का गुजराती भाषा में रूपान्तरण किया, जिसका नाम उन्होंने 'सर्वोदय' अर्थात्

'सबका कल्याण' रखा। यहीं से यह शब्द भारत में प्रचलित हुआ।

गाँधी के सर्वोदय समाज में व्यक्ति ही सर्वोपरि है और हर व्यक्ति को जीविका कमाने का अधिकार है। कोई भी काम ऊँचा या नीचा नहीं है। यदि व्यक्तियों का भला होता है, तो सम्पूर्ण समाज का भला होगा। सर्वोदय लोकतंत्र का पक्षधर और समानता का समर्थक है। अर्थात्

1. व्यक्ति की भलाई में ही सबकी भलाई है।
2. एक व्यक्ति (वकील) का कार्य उतना ही मूल्यवान हैं, जितना की नाई का, क्योंकिक सभी को अपने कार्य से जीविकोपार्जन का समान अधिकार है।
3. श्रम का जीवन अर्थात् खेती करने वाले किसान तथा हस्तशिल्पी का जीवन ही जीने योग्य है।

उपयोगितावाद एवं सर्वोदय में अन्तर

गाँधी के अनुसार, सबका अधिकतम सुख उपयोगितावाद से भिन्न है। अहिंसा का पुजारी इस उपयोगितावाद सिद्धान्त को नहीं मानेगा कि अधिकतम संख्या का सुख ही महानतम् सुख है। सर्वोदयी त्याग एवं तपस्या के लिए सदैव तैयार रहेगा, जबकि उपयोगितावावदी कभी त्याग करने को स्व–प्रेरित नहीं होगा। उपयोगिता को आधार मानकर ही वह किसी भी कार्य को उचित ठहराने का प्रयास करेगा। इस प्रकार सर्वोदयी और उपयोगितावादी में काफी अन्तर है।

गाँधी और विनोबा ने एक नैतिक आदर्श के रूप में 'सर्वोदय' स्वीकार किया है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सुखवाद सुख की प्राप्ति और आत्मपूर्णतावाद आत्म लाभ को नैतिकता का मापदण्ड मानते है। सर्वोदय के नैतिक आदर्श प्रचलित समाज की भौतिक मान्यताओं से सर्वथा भिन्न हैं। यही कारण है कि आज हमारे जीवन में प्रेम, सहयोग, सदभाव, सत्य और अहिंसा के सभी नैतिक मापदण्ड लुप्त होते जा रहे है। यह मानव जाति के सौभाग्य नहीं वरन् दुर्भाग्य के चिह्न है। गाँधी ने कहा–भगवान से मेरी प्रार्थना है और मैं तो आशा करूंगा, आप भी मेरी प्रार्थना में साथ दें, ताकि वे मुझे अपने जीवन दर्शन के अनुकूल चलने की शक्ति प्रदान करें। आचरण के बिना दर्शन ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार प्राण के बिना शरीर। गांधी के अनुसार नैतिकता हमारे जीवन का आधार है। व्यक्ति और समाज का अस्तित्व एवं उसकी प्रगति नैतिकता पर ही निर्भर है। व्यक्ति ही हमारे अन्दर संघर्ष और संहार की भावनाओं और प्रवृत्तियों को दबाकर परोपकार, शांति, सुख और सामंजस्य को प्रोत्साहित करता है।

सर्वोदय विचार का आधुनिक संदर्भ प्रदान करने का कार्य गांधी ने ही किया है। गांधी के लिए सर्वोदय शब्द का सार अर्थ है कि सब जीवन के क्षेत्र की प्राप्ति को एक साथ सुनिश्चित कर सके। प्राचीन काल में सभ्युदय शब्द का प्रयोग ऐहिक वैभव के अर्थ तक ही सीमित था। अतः गांधी ने केवल उदय शब्द का ही प्रयोग किया है।

सर्वोदय का गांधीय धारणा में जिस उदय की परिकल्पना की गई है वह वस्तुतः भौतिक परिलब्धियों के निश्चयवाद, न्यायसम्मत वितरण की आवश्यकता प्रतिपादित करती है। इस प्रकार सर्वोदय का आध्यात्मिक संदर्भ जहाँ मानव मात्र द्वारा परमश्रेय की उपलब्धि से संबंधित है, वहीं उसका भौतिक संदर्भ समाज में वितरणात्मक न्याय की प्रस्थापना की अनिवार्यता को रेखांकित करता है।

सर्वोदय की रूपरेखा को स्पष्ट करते हुए गाँधी जी ने लिखा है कि ''यदि हम चाहते है कि हमारा सर्वोदय अर्थात सच्चे लोकतंत्र का सपना सच्चा साबित हो, तो हम छोटे से छोटे भारतवासी को भारत का उतना ही शासक समझेंगे जितना देश के बड़े से बड़े आदमी को। इसके लिए शर्त यह है कि सब शुद्ध हो या न हो तो शुद्ध हो जाए और शुद्धता के साथ बुद्धिमानी भी होनी चाहिए। तब कोई भी अपने दिल में जाति–जाति और सवर्ण–अवर्ण के बीच भेदभाव नहीं रखेगा। हर एक सबको अपनी बराबरी का समझेगा और उन्हें प्रेम के रेशमी जाल में बांध कर रखेगा। कोई किसी को अछूत नहीं मानेगा। हर मेहनत करने वाले मजदूर और धनी पूँजीपति को समान समझेंगे। सबको अपने पसीने की कमाई से ईमानदारी की रोजी कमाना आता होगा और वे मानसिक व शारीरिक श्रम में कोई फर्क नहीं करेंगे। यह आदर्श स्थिति जल्दी लाने के लिए हम अपने आपको स्वेच्छा से भंगी बना लेंगे। जिस किसी में भी बुद्धि होगी वह कभी अफीम, शराब व किसी नशीली चीज को नहीं छुएगा। प्रत्येक पुरूष स्वदेशी का पालन जीवन व्रत के रूप में करेगा और हर एक स्त्री को जो अपनी पत्नी नहीं है, उसकी उम्र के हिसाब से अपनी माता, बहिन या पुत्री समझेगा और अपने हृदय में उसके प्रति कभी काम वासना नहीं रखेगा। जब जरूरत पड़ेगी वह अपने प्राण देने को तैयार होगा, मगर दूसरे की जान लेने की कभी इच्छा नहीं करेगा।''

सर्वोदय की नैतिक आस्था के महत्व का प्रतिपालन करते हुए गांधी ने कहा है ''सर्वोदय की सिद्धि अहिंसा की सिद्धि पर निर्भर है। अहिंसा की सिद्धि तपश्चर्या पर निर्भर है। तपश्चर्या सात्विक होनी चाहिए। उसमें अविश्रांत उद्यम, विवेक समाविष्ट है। शुद्ध तप में शुद्ध ज्ञान प्राप्त होता है। अनुभव बताता है कि लोग अहिंसा का नाम तो लेते हैं, लेकिन बहुतों को मानसिक आलस्य इतना रहता है कि वह वस्तुस्थिति का परिचय तक करने का परिश्रम नहीं उठाते है। दृष्टान्त लीजिये हिन्दुस्तान कंगाल है। हम कंगालियत दूर करना चाहते है। लेकिन कंगालियत कैसे हुई, इस का अर्थ क्या है, कैसे ये दूर हो सकती है इसका अभ्यास कितने लोग करते है? अहिंसा का भक्त तो ऐसे ज्ञान से भरा होना चाहिये।

गाँधी ने कहा ''इस प्रकार का साधन पैदा करना सर्वोदय का कर्तव्य है न कि किसी के साथ वाद विवाद में पड़ने का। सर्वोदय के संचालक गांधीवाद को भूल जायें। सर्वोदय के प्रत्येक वाक्य में अहिंसा और ज्ञान का दर्शन होना चाहिये।

सर्वोदय की धारणा में विभिन्न पक्ष

गांधी ने सर्वोदय की धारणा के तीन अनिवार्य पक्षों का अभिज्ञान किया है यथा–

1. सबके कल्याण में अपना कल्याण अर्न्तनिहित है। इसका अर्थ है कि व्यक्तिगत और सामुदायिक हितों

में कोई द्वंद्व नहीं है। जब मनुष्य सबके हितों की बात सोचेगा तो स्वयं का हित होना स्वाभाविक ही है। वास्तव में समाज कोई ब्राह्य तत्व अथवा संकल्यण नहीं है। व्यक्ति की सामाजिक चेतना उसे सामुदायिक हितों के प्रति संवेदनशील बनाती है। हितों के व्यक्तिपरक व समुदायपरक चेतना में समन्वय रखना तथा व्यक्तिगत स्वार्थों एवं सामाजिक हितों को संश्लिष्ट रखना सर्वोदय का मुख्य आधार है। इसके बिना सर्वोदय सम्भव नहीं है।

2. विभिन्न कार्यो के मध्य इस आधार पर दीनता अथवा श्रेष्ठता का भेद नहीं किया जा सकता कि उसमें शरीर–श्रम विनियुक्त हुआ है अथवा मानसिक व बौद्धिक श्रम। वस्तुतः समस्त कार्य समान महत्व रखते है। अतः वकील एवं हज्जाम दोनों के कार्य का मूल्य एक सा होना चाहिये। यह एक अत्यन्त क्रांतिकारी और विवादग्रस्त सिद्धांत है। इसका यह अर्थ है कि समाज के हर व्यक्ति के कार्य को पर्याप्त आदर प्राप्त होना चाहये। शारीरिक श्रम और बौद्धिक श्रम जो समाज के लिए हो उसे समान भाव से देखना चाहिये। वास्तव में मानव जाति का इतिहास उस शोषण की कला है, जिसमें बुद्धियुक्त मनुष्य ने उन लोगों को शोषण किया जिनमें बुद्धि कम थी। उस पारिवारिक भावना का बुद्धिजीवियों ने परित्याग किया, जिसके आधार पर परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को, उसकी क्षमता चाहे जैसी हो, समान सम्मान मिलता था। ज्ञान और कर्म के बीच द्वन्द्व, एक को ऊंचा समझना और दूसरे को नीचा, यह सर्वोदय के सिद्धान्त के विपरीत है।

3. श्रम प्रधान सरल जीवन ही सच्चा जीवन है। यह सिद्धान्त वस्तुतः पूर्व सिद्धान्त की ही निष्पत्ति है। सहयोग पर आधारित समाज में सरल और सादा जीवन को अपनाना ही पड़ेगा क्योंकि निर्बाध इच्छाओं की पूर्ति समाज में सम्भव नहीं है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को आत्म संयम को अपनाना ही पड़ेगा तथा श्रम की नैतिकता को आत्मज्ञान करना ही होगा।

सर्वोदय के अर्थ का स्पष्टीकरण करते हुए विनोबा ने लिखा है ''सर्वोदय यानी सबका उदय''। किसी का उदय और किसी का अस्त ऐसी बात नहीं। सर्वोदय शब्द बहुत अच्छा है और गांधीजी ने उसे गढ़ा है। ''सर्वभूतिहिते रताः'' की कल्पना भरी है। बाइबिल में भी यही विचार आता है। रस्किन ने उसी को आधार बनाकर अपनी 'अन्टु दिस लास्ट' लिखी है। उसका मतलब है कि ''पहले दर्जे वाले जितनी ही आखरी दर्जे वाली की रक्षा। परमेश्वर के यहाँ हाथी को मन तो चींटी को भी कन मिलता ही है। सेवक को भी ऐसी दृष्टि रखनी चाहिए।''

विनोबा का मत है कि ''हमें चन्द लोगों का उदय नहीं करना है, अधिक लोगों का उदय भी नहीं करना। अधिक से अधिक लोगों के उदय से भी हमको संतोष नहीं है, सबके उदय से ही हमें समाधान होगा। छोटे–बड़े, दुर्बल–सबल, जड़–बुद्धिमान, सबका उदय होगा, तभी हम चैन लेंगे। ऐसा विशाल भाव यह शब्द हमें दे रहा है।''

दादा धर्माधिकारी के अनुसार ''सर्वोदय शब्द नया भले ही हो, पर उसका अर्थ इतना ही है कि सबका जीवन साथ–साथ सम्पन्न हो। जीवन का अर्थ है विकास, अभ्युदय या उन्नति। सबका सहविकास हो, इसलिए सर्वोदय, लेकिन पुराने जमाने में अभ्युदय शब्द का प्रयोग ''ऐहिक वैभव'' के अर्थ तक ही सीमित था, इसलिए गांधी ने केवल उदय शब्द का प्रयोग किया। एक साथ समान रूप से सबका उदय हो, यही सर्वोदय का उद्देश्य है।''

उनका मत है ''सर्वोदय सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना चाहता है। अपने आदर्श के रूप में अद्वैत का सहारा लेता है और समन्वय के पक्ष में रहता है। अद्वैत हमारा आदर्श है। समन्वय हमारी नीति का समन्वय साधन है और अद्वैत साध्य है।'' समन्वय का अर्थ है विरोध एवं अन्तर्विरोधी का निराकरण। इस निराकरण को ही क्रांति कहते हैं। दूसरे के लिये जीता है और कोई भी अपने लिये नहीं जीता है। दादाधर्माधिकारी के शब्दों में, ''मैं जब दूसरे को जिलाने के लिए जिऊं और दूसरा मुझे जिलाने के लिय जिये, तब सबका जीवन सम्पन्न होगा और जिलाने के लिए जियो चरितार्थ होगा। यही सर्वोदय है।''

मूल्यांकन

सर्वोदय के तात्विक आधारों का विश्लेषण यह स्पष्ट कर देता है कि सर्वोदय की धारणा मनुष्य मात्र के उदय के संकल्प पर आधारित है। इस संदर्भ में सर्वोदय की धारणा मनुष्यों के हितों के मध्य किसी नैसर्गिक टकराव व द्वेष को मान्यता नहीं देती, अपितु उनके मध्य एक पूर्ण विरोधहीनता की कल्पना करती। तार्किक दृष्टि से मनुष्य मात्र के हितों के मध्य इस अनिवार्य अभेद का आधार यह है कि मनुष्यों का अंतिम लक्ष्य एक ही है और वह है सत्य से साक्षात्कार, सत्य के प्रति समर्पण की आध्यात्मिक आस्था। सर्वोदय की धारणा का मर्म है किन्तु ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि सर्वोदय दर्शन में इस मूल आस्था की अनुभूति सांसारिक व भौतिक प्रश्नों से पलायन का मार्ग नहीं सुझाती, अपितु मानव मात्र से उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में ऐसे आचरण व दृष्टिकोणों की अपेक्षा करती है, जिसके द्वारा प्रत्येक मनुष्य दूसरे मनुष्यों के सुखों में अपना सुख खोज सके और दूसरे के कल्याण को सुनिश्चित कर पाने में अपने अस्तित्व की सार्थकता समझ सके।

सारतः सर्वोदय में केवल भौतिक विकास की संकल्पना ही निहित नहीं है प्रत्युत सर्वोदय की धारणा की परिधि में मानव जीवन के सभी पक्ष अनिवार्यतः समाविष्ट है। सर्वोदय मानवीय नैतिकता के अद्वैतवादी अभिज्ञान की पराकाष्ठा है। सर्वोदयी तत्व ज्ञान का विचारधारा व कार्यक्रम के स्तर पर नैतिक, राजनैतिक, आर्थिक, रूपान्तरण एक विषद् विषय है। इसके आयाम बहुविध है। जिनमें सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राजनैतिक व आर्थिक संदर्भ स्वतः समाविष्ट हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *गांधी, हरिजनः 18.01.1948*
2. *गांधी, सम्पूर्ण गांधी वाड.मय भाग 67, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ 214–215.*

3. *गांधी, मोहनदास कर्मचन्द, सत्य के साथ मेरे प्रयोग अथवा आत्मकथा, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली 1982, पृष्ठ 282.*
4. *द्विवेदी, कमला, गांधी जी का शिक्षा दर्शन, श्री पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली 1986, पृष्ठ 80.*
5. *भावे, विनोबा, सर्वोदय विचार व स्वराज्य शास्त्र, अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ प्रकाशन, काशी, 1958, पृष्ठ 48.*
6. *धर्माधिकारी, दादा, सर्वोदय दर्शन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1979, पृष्ठ 17.*
7. *कृपलानी, जे.वी.,गांधी हिज लाइफ एण्ड थॉट, पब्लिकेशन डिवीजन, नई दिल्ली, 1971, पृष्ठ 368.*
8. *दीक्षित, गोपीनाथ, गांधीजी की चुनौती कम्यूनिज्म को, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, 1974, पृष्ठ 111–112.*
9. *दत्त, धीरेन्द्र मोहन, महात्मा गांधी का दर्शन, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1981, पृष्ठ 7.*
10. *गांधी, मोहनदास, सर्वोदय, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1957, पृष्ठ 7.*
11. *शर्मा, योगेन्द्र कुमार, भारतीय राजनीतिक विचारक, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ 239.*
12. *झा, राकेश कुमार, गांधीय चिन्तन में सर्वोदय, पोईन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 1995, पृष्ठ 31–36.*
13. *चन्देल, डॉ. धर्मवीर, गांधी चिन्तन के विभिन्न पक्ष, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2012, पृष्ठ 63–67.*
14. *कमल, के.एल., गांधी चिन्तन, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 1995, पृष्ठ 24.*
15. *हर्ष, हरदान, गाँधी विचार और दृष्टि, श्याम प्रकाशन, जयपुर, 1996, पृष्ट 49.*
16. *विवेक, रामलाल, महात्मा गांधी : जीवन और दर्शन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1996, पृष्ठ 108.*